BA Part I (H)
Paper I

Dr. Charanjeev Kr Thakur
Assistant Professor (Gr)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

कूले का समाजीकरण का सिद्धान्त (Cooley's Socialization Theory)

समाजीकरण सीखने की एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति समूह अथवा समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को ग्रहण करता है, अपने व्यक्तित्व का विकास करता है और समाज का क्रियाशील सदस्य बनता है। समाजीकरण द्वारा बच्चा सामाजिक प्रतिमानों को सीखकर उनके अनुरूप आचरण करता है, इससे समाज में निरन्तरता बना रहता है।

अमेरिकन समाजशास्त्री चार्ल्स कूले ने अपनी पुस्तक Human Nature and the Social order में समाजीकरण सिद्धान्त को प्रस्तुत किया। उनका सिद्धान्त 'आत्म दर्पण दर्शी सिद्धान्त (Looking glass self theory) नाम से जाना जाता है। कूले ने व्यक्ति और समाज के सम्बंधों को स्पष्ट करने के लिए इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। कूले का मानना है कि व्यक्ति का समाज के सम्पर्क में आने पर ही 'आत्म' का विकास होता है। समाज व्यक्ति के लिए दर्पण का कार्य करता है, वह उसमें अपने प्रतिबिम्ब को देखता है और समाज उसके बारे में

क्या विचार रखते हैं, इसी आधार पर वह अपने बारे में अपनी धारणा बनाता है। जिस प्रकार हम दर्पण देखकर यह जान लेते हैं कि हम जो वस्त्र पहने हैं उसमें कैसे लगते हैं। इसी प्रकार बालक भी समाज रूपी दर्पण में अपने आपको देखता है। समाज के लोग उसके बारे में क्या कहते हैं, इसी आधार पर वह अपने बारे में राय बनाता है। इसी राय के आधार पर ही उसमें हीनता या श्रेष्ठता के भाव पैदा होते हैं।

हारटन तथा हण्ट का मत है कि चार्ल्स कूले ने looking glass self शब्दावली को अंग्रेजी उपन्यासकार विलियम मेकपीस थैकरे के उपन्यास vanity fair से अपनाया। इस उपन्यास में स्त्रियां अपने संबंध में दूसरों के विचारों से प्रभावित होती हैं। थैकरे के अनुसार, "संसार एक दर्पण है जो प्रत्येक व्यक्ति को उसका स्वयं का चेहरा प्रतिबिम्बित करता है। आप कैसे चढ़ाइये तो इसमें आप चिड़चिड़े दिखायी देंगे, आप इसकी ओर तथा इसके साथ हंसिये तो आपका खुशमिजाज व कृपालु साथी होगा।"

कूले ने Looking glass self प्रक्रिया के तीन चरणों का उल्लेख किया है–

(1) व्यक्ति यह सोचता है कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं।

(2) दूसरों के निर्णय के आधार पर वह स्वयं अपने बारे में क्या सोचता है।

(3) मैं अपने बारे में सोचकर अपने को कैसा मानता हूँ अर्थात गर्व अनुभव करता हूँ या ग्लानि।

समाज किसी व्यक्ति के बारे में क्या सोचता है और फिर वह व्यक्ति उस संदर्भ में क्या सोचता है, यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है। इसी क्रिया एवं प्रतिक्रिया के द्वारा व्यक्तियों में स्व का विकास होता है। व्यक्ति सामाजिक मूल्यों आदर्शों एवं नियमों का इसलिए पालन करता है कि समाज उसे एक अच्छे व्यक्ति के रूप में स्वीकार करें।

हर्टन तथा हण्ट ने तीनों चरणों को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है– मान लीजिए आप एक कमरे में प्रवेश करते हैं जहां कुछ व्यक्ति एक समूह में परस्पर बातें

कर रहे है। आपके आते ही वे बहाना बनाकर वहां से चले जाते है और ऐसा कई बार होता है तो आपको अपने बारे में हीनता की भावना महसूस होगी। इसके विपरीत आपके कमरे में प्रवेश करने पर सभी व्यक्ति आपको घेर लेते है और आपसे चर्चा करना चाहते है तो आपको गर्व महसूस होगा। इस प्रकार दूसरे व्यक्ति हमारे प्रति जिस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करते है, हम अपने बारे में वैसी धारणा बनाते है।

इस प्रकार कूले के अनुसार व्यक्ति का दूसरों से सम्पर्क होने से ही self का निर्माण होता है जो कि समाजीकरण का प्रमुख आधार है। स्व के निर्माण के आधार पर ही व्यक्ति अपना मूल्यांकन करता है, वह अपने को हीन या श्रेष्ठ समझता है और समाजीकरण की दिशा तय करता है। व्यक्ति समाज का ही प्रतिबिम्ब है।